डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

भारत भूषण अग्रवाल नागर जीवन के पहले सजग कवि थे – अरुण कमल

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित भारत भूषण अग्रवाल जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी संपन्न

नई दिल्ली। 21 दिसंबर 2020; साहित्य अकादेमी द्वारा आज आभासी मंच पर 'भारत भूषण अग्रवाल : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारत भूषण अग्रवाल की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर आयोजित इस संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात कवि अरुण कमल ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत भूषण अग्रवाल की सुपुत्री अन्विता अब्बी उपस्थित थीं तथा उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने की। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा प्रस्तुत किया गया। विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका ममता कालिया ने की और सविता सिंह, ओम निश्चल, पंकज चतुर्वेदी एवं शैलेंद्र कुमार शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए अरुण कमल ने कहा कि भारत भूषण अग्रवाल नागर जीवन के पहले सजग कवि थे। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं, जटिलताओं को एक नई जीवंत भाषा के साथ प्रस्तुत किया। आगे उन्होंने कहा कि वे उन कवियों में थे, जिन्होंने कवियों के कठिन जीवन को भी अपनी कविताओं में प्रस्तुत किया। भारत जी ने कविता की सृजन प्रक्रिया पर गहराई से विचार किया था। उन्होंने मिथकों की पुनर्व्याख्या भी बिलकुल निराले ढंग से की। अन्विता अब्बी ने उन्हें अपने संपूर्ण परिवार के रचनाकार के रूप में याद करते हुए कहा कि उन्होंने अपने जीवन को ही नहीं अपने परिवार के सभी सदस्यों की भी समर्थ रचना की। उन्होंने हमेशा धन से ज्यादा साहित्य सृजन को आगे रखा और इसी सर्जना की तलाश में उन्होंने 16 नौकरियाँ बदलीं। उन्होंने भारत भूषण अग्रवाल के दो अधूरे कार्यों का भी उल्लेख किया।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि वे एक सच्चे रचनाकार थे। उन्होंने अपनी कविता में जितने सवाल उठाए हैं वे सभी अपने आप में क्रांतिकारी और साहसिक सवाल हैं। उनकी पूरी कविता कवि के मन की रूढ़ियों से ही नहीं बल्कि समाज की सभी रूढ़ियों से लड़ती है। अपने को निष्कवच करते हुए वे हमेशा एक नैतिक आक्रोश प्रस्तुत करते हैं। इससे पहले साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि कोरोना महामारी के कारण इस आयोजन में देर हुई है और अब हम इसे आभासी मंच पर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत भूषण अग्रवाल ने तमाम तरह के तनावों और संघर्ष के बावजूद कविता के साथ–साथ नाटक, निबंध, आलोचना, कहानी, उपन्यास, बाल साहित्य एवं अनुवादों में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा को सामने रखा। भारत जी बहुआयामी व्यक्तित्व के रचनाकार थे।

विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखिका ममता कालिया ने की जो उनकी भतीजी भी हैं। सर्वप्रथम आलोचक शैलेंद्र कुमार शर्मा ने उनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारत जी ने परंपरा से खुद को जोड़ा और भारतीय परंपरा का संवर्धन किया। प्रख्यात कवयित्री सविता सिंह ने उनके एब्सर्ड दार्शनिक पक्ष को उजागर करते हुए कहा कि उन्होंने इसी पक्ष को अपनी कविता की गहराई बनाया। उन्होंने अपने कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए अलग शैली और शिल्प तैयार किया। वे समाज के विभिन्न पक्षों/पात्रों के अलग–अलग व्यक्तित्वों को बेहद सूक्ष्मता से पकड़कर प्रस्तुत करते रहे। कवि एवं आलोचक पंकज चतुर्वेदी ने उनके व्यंग्य की क्षमता का आकलन करते हुए कहा कि भारत भूषण अग्रवाल परंपरा का आदर करते हुए भी परंपरा के खिलाफ हमेशा व्यंग्य की नजर से देखते हैं। वे ऐसी पैनी नजर इसलिए रख पाए, क्योंकि वे खुद एक बड़े आत्मालोचक थे। उन्होंने उनके तुक्तकों का उल्लेख करते हुए कहा कि विनोद के साथ विरोध करना उनकी पहचान थी। उनकी कविताओं में जो

संशय है वही उन्हें श्रेष्ठ बनाता है। आलोचक ओम निश्चल ने उनकी प्रतिभा का सही विशलेषण न होने की बात करते हुए कहा कि वे छंद के साथ–साथ नई कविता के बड़े कवि थे। उन्होंने मिथकों को नए तरीके से चुनौतियाँ दीं। कथाकार ममता कालिया ने उन्हें अपने चाचा और एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में याद किया। उन्होंने कहा कि भारत भूषण जी ने स्वयं को ही निर्मित नहीं किया बल्कि अपने परिवार का भी निर्माण किया। भारत जी हास्य कवि नहीं बल्कि व्यंग्य के कवि थे। यह उनकी प्रतिभा ही थी कि उन्होंने अपने सभी समकालीन रचनाकारों और उनकी रचनाओं पर व्यंग्य से भरे तुक्तक लिखे। भारत जी अपने समकालीनों में बिलकुल अलग दिखाई देते हैं। आगे उन्होंने कहा कि लेखक का जीवन उसकी मृत्यु के बाद ही शुरु होता है। उन्होंने भारत भूषण अग्रवाल का सही मूल्यांकन न होने पर भी चिंता प्रकट की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन संगोष्ठी का संचालन कर रहे अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

के. श्रीनिवासराव